तकदीर का बयान | मुस्लीम शरीफ

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस मुबारक हे, तकदीर के मामले मे बहस करना मना हे.

{01} रावी अब्दुल्लाह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया तुम मे से हर शख्स अपनी माँ के पेट मे चालीस दिन नुत्फे की सूरत मे, फिर चालीस दिन जमे हुए खून की सूरत मे, फिर इतने ही दिन गोश्त के लोथडे की सूरत मे रहता हे, फिर फरिश्ते को भेजा जाता हे वह उसमे रूह फूंक देता हे, फिर उस्को चार कलिमात लिखने का हुक्म दिया जता हे उसका रिज्क, उसकी ज़िन्दगी, उसका अमल और उसका बदबख्त या खुशनसीब होना लिख दिया जाता हे, तो उस ज़ात की कसम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं हे. एक शख्स जन्नतियों के अमल करता रहता हे यहां तक

की उसके और जन्नत के दरमियान एक हाथ का फासला रह जाता हे, फिर उस पर तकदीर गालिब आ जाती हे और वह जहन्नमियों जैसे अमल करता हे और जहन्नम मे दाखिल हो जाता हे.

और एक शख्स जहन्नमियों जैसे अमल करता रहता हे यहां तक की उस शख्स और जहन्नम के दरमियान एक हाथ का फासला रह जाता हे फिर उस पर तकदीर गालिब आ जाती हे वह जन्नतियों जैसे अमल करता हे और जन्नत मे दाखिल हो जाता हे.

{02} रावी अनस रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अल्लाह तआला ने माँ के रहम (गर्भ और पेट) पर एक फरिश्ता मुकर्रर कर रखा हे जो अर्ज़ करता हे की यह नुत्फा हे, ऐ रब अब यह जमा हुआ खून हे, ऐ रब अब यह खून का लोथडा हे, फिर जब अल्लाह तआला उसके पैदा करने का इरादा करत हे तो फरिश्ता अर्ज़ करता हे ऐ रब यह नर हे या

मादा? बदबख्त हे या नेकबख्त? इसका रिज्क कितना हे और इसकी उम्र क्या हे? तो इस तरह उसकी माँ के पेट मे ही सब कुछ लिख दिया जाता हे.

वज़ाहत: इन्सान के अपनी माँ के पेट मे ही उसका रिज्क, उम्र, नेकबख्त व बदबख्त होना, जन्नती या दोज़खी होना लिख दिया जाता हे, यही तकदीर कहलाती हे जिस पर ईमान लाना फर्ज हे.

{03} रावी हजरत अली रदी की रिवायत का खुलासा

हम जन्नतुल बकी (मदीना के कब्रिस्तान) मे एक जनाज़े के साथ थे, हमारे पास रसूलुल्लाहﷺ तशरीफ लाकर बैठ गये, आपके पास एक छडी थी, आपने सर झुकाया और अपनी छडी से ज़मीन कुरेद ने लगे, फिर फरमाया तुम मे से हर शख्स का ठिकाना अल्लाह तआला ने जन्नत या जहन्नम मे लिख दिया हे और उसका अच्छा होना या बुरा होना भी अल्लाह तआला

ने लिख दिया हे.

एक शख्स ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल हम अपने मुताल्लिक लिखे हुए पर भरोसा क्यों न करले और अमल करना छोड दें? आपने फरमाया जो शख्स खुशनसीबो मे से होगा वह बहुत जल्दी खुशनसीबो की तरह अमल करेगा, और जो शख्स बुरे लोगों मे से होगा वह बहुत जल्दी बुरे अमल करने वालों मे शामिल होगा.

फिर आपने फरमाया अमल करो, नेक लोगों के लिये नेक आमाल आसान कर दिये जायेंगे और बुरे लोगों के लिये बुरे आमाल आसान कर दिये जायेंगे, फिर आपने करआन पाक की यह आयत तिलावत फरमाई, सूर लैल ९२, आयत ५-१० तर्जुमा - जिसने सदका किया और अल्लाह तआला से डरा और नेकी की तस्दीक की हम उसके लिये नेकियों को आसान कर देंगे, और जिसने कंजूसी की और लापरवाही की और नेकी को झुठलाया हम उसके लिये बुराईयों को आसान कर देंगे.

{04} रावी अबू हुरैरह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया हज़रत आदम (अलै) और हज़रत मूसा (अलै) ने अल्लाह के सामने बहस की तो आदम (अलै) मूसा (अलै) पर गालिब आ गये, मूसा (अलै) ने कहा आप वही आदम हे जिनको अल्लाह तआला ने अपने हाथ से पैदा किया और आप मे अपनी पसन्दीदा रूह फूंकी और फरिश्तों से आपको सज्दा कराया और आपको अपनी जन्नत मे रखा, फिर आपकी गलती की वजह से जन्नत से ज़मीन पर मुन्तकिल किया, आदम (अलै) ने फरमाया की आप वही मूसा हे जिनको अल्लाह तआला ने अपनी रिसालत और अपने कलाम से फज़ीलत दी और आपको (तौरात की) वो तख्तियां दी जिनमे हर चीज़ का बयान हे और आपको सरगोशी (अपने से हम-कलाम होने) के लिये चुना, बताओ आपकी मालूमात के मुताबिक अल्लाह तआला ने मेरे पैदा किये जाने से कितनी मुद्दत पहले

तौरात को लिख दिया था?

मूसा (अलै) ने कहा ४० साल पहले, आदम (अलै) ने कहा आपने तौरात मे यह पढा हे की आदम ने अपने रब की नाफरमानी की और वह गुमराह हुए, उन्होंने कहा हां, आदम (अलै) ने फरमाया की आप मेरे उस अमल मे मलामत (इल्ज़ाम देते) कर रहे हे जिसको अल्लाह तआला ने मुझे पैदा करने से चालीस साल पहले लिख दिया था की मे ये अमल करूंगा, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया फिर आदम (अलै) मूसा (अलै) पर गालिब आ गये.

वज़ाहत: हज़रत आदम (अलै) के कलाम के मायने यह हे की ऐ मूसा तुमको इल्म हे की अल्लाह तआला ने मुझे पैदा करने से पहले यह वजह लिख दी थी और मेरे हक मे मुकद्दर कर दी थी इसलिये उसका होना यकीनी था, और अगर मे तमाम मख्लूक के साथ मिलकर भी उस वजह (सबब और कारण) से एक ज़र्रे के बराबर भी

इनकार करना चाहता तो न कर सकता, तो तुम मुझे उस पर क्यों मलामत करते (इल्ज़ाम देते) हो.

{05} रावी अब्दुल्लाह बिन अमर रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ने फरमाया अल्लाह तआला ने आसमानों और जमीनों को पैदा करने से पचास हज़ार साल पहले मख्लूकात की तकदीर को लिखा और उस वकत अल्लाह तआला का अर्श पानी पर था.

{06} रावी अबू हुरैरह रदी की रिवायत का खुलासा

कुरैश के मशिक लोग तकदीर के मुताल्लिक रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم से बहस करने के लिये आये, उस वकत यह आयत नाज़िल हुई, सूर कमर ५४, आयत ४८-४९ तर्जुमा- जिस दिन वे जहन्नम मे औंधे मुँह घसीटे जायेंगे और उनसे कहा जायेगा की दोज़ख का अज़ाब चखो, बेशक हमने हर चीज़ तकदीर के साथ बनाई हे.

{07} रावी अब्दुल्लाह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया तमाम इन्सानों के दिल, रहमान (अल्लाह) की उंगलियों मे से दो उंगलियों के दरमियान हे, जिसके लिये चाहता हे उसे फेर देता हे, इसलिये रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ बार-बार पढते थे अल्लाहुम्-मा मुसरिफल कुलूबि सर्रिफ् कुलूबना अला ताअति-का, तर्जुमा: ऐ अल्लाह दिलों के फेरने वाले, हमारे दिलों को अपनी इताअत पर फेर दीजिए.

{08} रावी अबू हुरैरह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया इन्सान पर जो उसके ज़ीना का हिस्सा लिखा हुआ हे वह उस्को मिलेगा, फिर आँखों का ज़ीना (गैर मेहरम औरतों को) देखना हे और कानों का ज़ीना (गन्दी और बेहयाई की) बात सुनना हे और ज़बान का ज़ीना गैर मुनासिब बात करना हे और हाथों का ज़ीना गैर मेहरम को पकडना हे और पैरों का ज़ीना

गैर मेहरम के लिये चलना हे, दिल ज़ीना की ख्वाहिश करता हे और शर्मगाह उसकी तस्दीक करती हे.

वज़ाहत: बाज़े लोग हकीकत मे ज़ीना करते हे और बाज़े लोग जिना की तरफ ले जाने वाली चीज़ों मे मुलव्वस होते हे, दिल मे बुरे ख्यालात और गुनाह की तरफ दिलचस्पी व रूचि दिलाना शैतान की तरफ से होता हे, अगर इसका इलाज करते रहें और उन बुरे ख्यालात पर अमल न करें तो गुनाह नहीं लिखा जायेगा, बल्कि गुनाह न करने पर एक नेकी लिखी जायेगी, इसलिये बुरे ख्यालात आने के फौरन बाद बार-बार यह पढिये अउजु बिल्लाहि मिनश्शैता निर्रजीम.

{09} रावी अबू हुरैरह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया हर बच्चा फितरत (यानी इस्लाम) पर पैदा होता हे, फिर उसके माँ-बाप उस्को यहूदी या ईसाई या मजूसी (आग का पुजारी) बना देते हे, जैसे जानवर का मुकम्मल बच्चा पैदा होता हे, क्या

तुम्हें कोई अंग कटा हुआ नज़र आता हे? (यानी कोई नज़र नहीं आता हे). फिर आपने यह आयत तिलावत फरमाई, सूर रूम 30, आयत 30 तर्जुमा - (ऐ लोगो अपने उपर) अल्लाह की बनाई हुई फितरत (दीने इस्लाम) को इख्तियार कर लो जिस पर उसने लोगों को पैदा किया, अल्लाह की तखलीक (बनावट) मे कुछ रद्दोबदल नहीं हो सकता हे.

वज़ाहत: हर पैदा होने वाला बच्चा फितरते इस्लाम पर पैदा होता हे, अपने बाप दादा (पूर्वजों) की पुश्तों मे बच्चों से तौहीद (एक अल्लाह को मानने) पर कायम रहने का जो वायदा लिया गया वह फितरत हे, बच्चे उसी वायदे पर पैदा होते हे, फिर माँ बाप की वजह से वह फितरत बदल जाती हे. अधिक तफसील के लिये पढिये तर्जुमा व तफसीर सूर आराफ ७, आयत १७२.

{10} रावी अब्दुल्लाह बिन मसउद रदी की रिवायत का खुलासा

उम्मे हबीबा (रदी) ने दुआ की ऐ अल्लाह मेरे शौहर रसूलुल्लाहﷺ मेरे वालिद अबू सुफियान और मेरे भाई की उम्र के लम्बा होने से मुझे फायदा पहुंचे, रसूलुल्लाहﷺ ने उनसे फरमाया तुमने अल्लाह तआला से उन मुद्दतों का सवाल किया जो मुकर्रर हे और उन कदमों का जो निर्धारित हे, और उस रिज्क का जो तकसीम हो चुका हे, इनमे से कोई चीज़ वकत पूरा होने से पहले नहीं आयेगी और न वकत पूरा होने के बाद वाके होगी, अगर तुम अल्लाह तआला से यह सवाल करती की अल्लाह तआला तुम्हें जहन्नम के अज़ाब से महफूज़ रखे और कब्र के अज़ाब से अपनी पनाह मे रखे तो यह तुम्हारे लिये बेहतर होता, एक शख्स ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या (मौजूदा) बन्दर और खिन्ज़ीर (सुअर) उन्हीं लोगों की नस्ल से हे जिनकी शक्लें बिगाड दी गई थीं? रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया अल्लाह तआला ने किसी कौम को अज़ाब देकर या हलाक करके उसकी

आगे नस्ल नहीं चलाई, बेशक बन्दर और खिन्ज़ीर उससे पहले भी थे.

वज़ाहत: वे लोग जो अल्लाह के हुक्म से बन्दर और खिन्ज़ीर बने थे वे तीन दिन के बाद मर गये थे, इसलिये मौजूदा बन्दर और खिन्ज़ीर उनकी नस्ल मे से नहीं हे. (तफसीर इबने कसीर)

{11} रावी अबू हुरैरह रदी की रिवायत का खुलासा

रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया अल्लाह तआला के नज़दीक ताकतवर मोमिन कमज़ोर मोमिन से ज़्यादा अच्छा और ज़्यादा महबूब हे, और हर एक मे खैर हे, जो चीज़ तुमको नफा दे उसमे हिर्स करो (यानी उस्को हासिल करो), अल्लाह की मदद चाहो और थक कर न बैठ जाओ, अगर तुम पर कोई मुसीबत आये तो यह न कहो काश मे ऐसा कर लेता, हां यह कहो की यह अल्लाह तआला की तकदीर हे, उसने जो चाहा कर दिया, यह लफ्ज़ "काश' शैतान कहलवाता हे.

एक हज़ार मुन्तखब हदीसे मुस्लीम शरीफ हिन्दी.